जंगलों का शिक्षण : पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की व्याख्या

लोकेश डसीला

पाठ्यपुस्तक का अध्याय 'किसके जंगल?' भारत के विभिन्न क्षेत्रों के समुदायों की विविध कहानियों के माध्यम से जंगलों का परिचय कराता है। नीतिगत दस्तावेज़ इस अध्याय को, व्यापक पाठ्यचर्या के उद्देश्यों व विद्यार्थियों के दैनिक जीवन की वास्तविकताओं, दोनों से जोड़ने में शिक्षकों की किस प्रकार सहायता करते हैं?

भारत भर में कार्यरत अनेक स्कूली शिक्षकों को पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता प्रदान करने में पाठ्यपुस्तकें केन्द्रीय भूमिका निभाती हैं।[1] लेकिन, पाठ्यपुस्तकों का निर्माण अकसर व्यापक पाठक-वर्ग को ध्यान में रखकर किया जाता है (उदाहरण के लिए, एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें पूरे भारत के विद्यार्थियों के लिए लिखी जाती हैं)। ऐसे में जब उत्तराखण्ड जैसे भौगोलिक रूप से विशिष्ट क्षेत्रों के बच्चे इन पुस्तकों से पारिस्थितिकी सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करते हैं, तब शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि केवल पाठ्यपुस्तक का पाठ पढ़ने के स्थान पर वे उसकी विषयवस्तु की ऐसी व्याख्या करें जो स्कूली शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को भी पूरा करे और सीखने की प्रक्रिया को स्थानीय सन्दर्भों से भी जोड़े।[2] इससे शिक्षकों के सामने कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न खड़े होते हैं : मसलन, हम यह कैसे पहचानें कि पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को पूरा करने में कहाँ कम पड़ सकती है? इस कार्य में संलग्न शिक्षकों को नीतिगत दस्तावेज़ किस प्रकार की दिशा प्रदान करते हैं? मैं इस लेख में उत्तराखण्ड के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के लिए एक विशिष्ट उदाहरण के माध्यम से इन प्रश्नों की पड़ताल कर रहा हूँ। यह उदाहरण कक्षा-5 की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक के अध्याय-20 ('किसके जंगल?') पर आधारित है, जो विद्यार्थियों को प्रकृति, सामुदायिक जीवन और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े प्रश्नों से परिचित कराता है।[3]

जहाँ शिक्षकों को काम करने की ज़रूरत है

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ़) 2005 छह ऐसे मानदण्ड निर्धारित करती है जिनका उपयोग यह समीक्षा करने के लिए किया जा सकता है कि पर्यावरण

अध्ययन और विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के अध्याय पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को कितने प्रभावी ढंग से पूरा करते हैं। मैंने जंगलों पर आधारित इस अध्याय की समीक्षा के लिए इन मानदण्डों का उपयोग किया है :

1. विषयवस्तु की वैधता : इस मानदण्ड के अनुसार विषयवस्तु की वैधता *"यह माँग करती है कि पाठ्यचर्या शिक्षार्थियों तक महत्त्वपूर्ण व सही वैज्ञानिक जानकारी पहुँचाए। पाठ्यचर्या को शिक्षार्थियों के संज्ञानात्मक स्तर तक ले जाने के लिए विषयवस्तु को सरल तो किया जाए लेकिन उसे इतना हल्का नहीं बनाया जाए कि जानकारी या तो मूल रूप से ग़लत और/या निरर्थक हो जाए।"*[2] इस अध्याय में झारखण्ड के कुरुख (ओरांव) जनजातीय समुदाय की एक महिला सूर्यमणि की वास्तविक कहानी, ओडिशा की कक्षा-10 की छात्रा सिकिया द्वारा मुख्यमंत्री को लिखे गए पत्र व मिज़ोरम में सैमा सर और *झूम* खेती की कहानी के माध्यम से बच्चों को जंगलों से परिचित कराया गया है। ये पहलू विषयवस्तु की वैधता को सम्बोधित करते हैं क्योंकि वे निम्नलिखित बातों पर ध्यान आकर्षित करते हैं :

(1) पाठ्यपुस्तक में किन लोगों के जीवन को स्थान दिया गया है (जंगलों को वन-आश्रित समुदायों के अनुभवों के माध्यम से प्रस्तुत करना);

(2) किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्वपूर्ण माना गया है (सामुदायिक ज्ञान, वन-आधारित आजीविकाएँ और सांस्कृतिक परम्पराएँ सहित);

(3) विज्ञान को समाज के साथ किस प्रकार जोड़ा गया है (पारिस्थितिकी को आजीविका और पहचान से जोड़कर)।

इन कहानियों में से सूर्यमणि की कहानी उत्तराखण्ड के विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक रूप से सबसे अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। सूर्यमणि का जंगल से गहरा सम्बन्ध है और वह शिक्षा के माध्यम से अपनी व अपने समुदाय की पहचान को सशक्त बनाने का कार्य करती हैं। प्रत्येक रविवार को वह अपने गाँव के बच्चों को जंगल में ले जाती हैं ताकि वे जंगली पौधों और जानवरों के बारे में सीख सकें। इससे बच्चों को जंगल को केवल आजीविका के साधन के रूप में नहीं, बल्कि दैनिक जीवन के अभिन्न अंग के रूप में देखने का अवसर मिलता है : सूर्यमणि हमेशा कहती हैं, *"जंगल को पढ़ना, किताबें पढ़ने जितना ही ज़रूरी है।"* वह कहती हैं, *"हम आदिवासी हैं और हमारी ज़िन्दगी जंगलों से ही जुड़ी है। अगर जंगल नहीं बचेंगे, तो हम भी नहीं बचेंगे।"*[3] अध्याय में यह भी उल्लेख है कि उन्होंने 'तोरांग' (कुरुख भाषा में इसका अर्थ 'जंगल' है) नामक एक सामुदायिक केन्द्र स्थापित किया, जहाँ लोगों को अपने गीतों, नृत्यों, पहनावे, भाषा, साहित्य और पारम्परिक वाद्ययंत्रों को महत्त्व देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।[3] पाठ्यचर्या के दृष्टिकोण से यह विषयवस्तु एनसीएफ़-2005 में विविधता, समावेशन और सामाजिक जीवन में निहित ज्ञान पर दिए गए बल के अनुरूप है।

2.संज्ञानात्मक वैधता : यह मानदण्ड *"माँग करता है कि पाठ्यचर्या की विषयवस्तु, प्रक्रिया, भाषा व शिक्षा-शास्त्रीय कार्य-प्रणाली आयु के अनुरूप हों और बच्चे की संज्ञानात्मक पहुँच में हों।"*[2] अध्याय में दी गई अधिकांश जानकारी कक्षा-5 के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त प्रतीत होती है। चूँकि यह सामुदायिक जीवन से निकटता से जुड़ी हुई है, इसलिए उत्तराखण्ड की अनेक कक्षाओं में बच्चे इससे आसानी से जुड़ पाएँगे और इसे अपने अनुभवों से आसानी से जोड़ पाएँगे।

हालाँकि, अध्याय में कुछ ऐसे विचार भी प्रस्तुत किए गए हैं जिन्हें बच्चों के लिए उनके पूर्व ज्ञान और समझ के स्तर को देखते हुए समझना कठिन हो सकता है। उदाहरण के लिए, 'सोचो' शीर्षक के अन्तर्गत दिए गए प्रश्न चिन्तन और विश्लेषण को प्रोत्साहित करने के लिए हैं। ऐसा ही एक प्रश्न कहता है कि : *"अख़बारों में से जंगल की ख़बरें इकट्ठी करो। क्या जंगल कटने के कारण मौसम पर प्रभाव के बारे में कोई ख़बर है? क्या?"*[3] हालाँकि कक्षा-5 के विद्यार्थी ख़बरें इकट्ठी कर सकते हैं और जंगलों की कटाई के कुछ प्रत्यक्ष प्रभावों की पहचान भी कर सकते हैं, लेकिन प्रश्न का दूसरा भाग जलवायु परिवर्तन और दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रक्रियाओं के बारे में थोड़ी पूर्व समझ की अपेक्षा करता है। अतिरिक्त व्याख्या के बिना यह अपेक्षा इस स्तर के अनेक बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता से परे हो सकती है।

जनजातीय शब्दावली से सीधे लिए गए शब्दों को छोड़कर अध्याय की भाषा सामान्यतः सरल और सुगम है। हालाँकि, हिन्दी संस्करण में प्रयुक्त कुछ शब्द – जैसे 'हालात' और 'पंसारी' – उत्तराखण्ड के विद्यार्थियों के लिए अपरिचित हो सकते हैं। 'स्कॉलरशिप (वजीफ़ा)' शब्द के स्थान पर उपयुक्त हिन्दी शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। अन्त में, हालाँकि फ़सल के सन्दर्भ में 'चावल' का प्रयोग स्वीकार्य है, पर बुवाई के सन्दर्भ में 'धान' अधिक उपयुक्त और सटीक होता।

3. प्रक्रिया की वैधता : यह मानदण्ड *"माँग करता है कि पाठ्यचर्या शिक्षार्थियों को उन प्रणालियों और प्रक्रियाओं को अर्जित करने में संलग्न करे जो वैज्ञानिक जानकारी के पुष्टीकरण व सृजन करने की ओर ले जाती हैं व विज्ञान में बच्चे की स्वाभाविक जिज्ञासा एवं सृजनशीलता का पोषण करती हैं। प्रक्रिया की वैधता एक बेहद महत्त्वपूर्ण कसौटी है क्योंकि यह शिक्षार्थी को 'विज्ञान को सीखने में' सहायता करती है।"*[2]

सूर्यमणि के संघर्ष की कहानी, उनके और मनिया चाचा के बीच के संवाद, बुढ़ियामाई के शब्द व सिकिया द्वारा मुख्यमंत्री को लिखा गया पत्र, बच्चों को यह समझने का अवसर प्रदान करते हैं कि वैज्ञानिक ज्ञान कैसे निर्मित और प्रमाणित होता है। जीवन के वास्तविक अनुभवों और पारम्परिक ज्ञान पर आधारित ये उदाहरण बच्चों को केवल जानकारी स्वीकार करने की बजाय उस पर मनन करने, प्रश्न पूछने और विचारों के अर्थ समझने के लिए प्रेरित करते हैं। इन कहानियों के माध्यम से अध्याय तार्किक सोच के विकास में सहायता करता है व साक्ष्यों के साथ जूझना, जिज्ञासा और समझ के आधार पर सीखने को प्रोत्साहित करता है।

4. ऐतिहासिक वैधता : यह मानदण्ड *"माँग करता है कि विज्ञान की पाठ्यचर्या ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य द्वारा सूचित हो जिससे शिक्षार्थी यह अहसास कर सकें कि समय के साथ-साथ विज्ञान की अवधारणाएँ कैसे विकसित हुईं। यह शिक्षार्थियों को यह समझने में भी मदद करता है कि विज्ञान एक सामाजिक उद्यम है और सामाजिक कारक किस प्रकार विज्ञान के विकास को प्रभावित करते हैं।"*[2] इस अध्याय में वनाधिकार अधिनियम, 2006 पर एक संक्षिप्त जानकारी दी गई है : *"जो लोग कम-से-कम 25 साल से जंगल में रह रहे हैं उनका वहाँ की ज़मीन और वहाँ पैदा होने वाली चीज़ों पर हक़ है। उन्हें जंगल से हटाया नहीं जाए। जंगल बचाने का काम उनकी ग्राम सभा को करना है।"*[3]

इस बात के अलावा, अध्याय में ऐतिहासिक सन्दर्भ लगभग अनुपस्थित हैं। अध्याय में इस बात के संकेत नहीं हैं कि जंगलों पर नियंत्रण और वन-आश्रित समुदायों के अधिकार लम्बे समय से विवाद और संघर्ष का विषय रहे हैं। उदाहरण के लिए, यह उल्लेख करना प्रासंगिक होता कि ब्रिटिश शासन के दौरान बनाए गए वन क़ानूनों ने जंगलों को राज्य के नियंत्रण में ला दिया, पारम्परिक उपयोग के अधिकारों को सीमित किया और वन-आश्रित समुदायों व वनभूमि के बीच लम्बे समय से चले आ रहे सम्बन्धों को बदल दिया। स्वतंत्रता के बाद भी ये संघर्ष समाप्त नहीं हुए। संरक्षण, विकास परियोजनाओं और विस्थापन से जुड़ी बदलती नीतियों के कारण ये संघर्ष जारी रहे, जिससे वनाधिकारों को लेकर निरन्तर बहस चलती रही है।[4] चूँकि अध्याय का केन्द्र जंगलों पर अधिकार का प्रश्न है, इसलिए ऐसे ऐतिहासिक सन्दर्भ की अनुपस्थिति चर्चा को उस दीर्घकालिक इतिहास से अलग-थलग कर देती है जिसके परिणामस्वरूप ये अधिकार विकसित हुए हैं। यदि औपनिवेशिक काल से लेकर वर्तमान तक के कुछ प्रमुख घटनाक्रमों का संक्षिप्त उल्लेख भी किया गया होता, तो विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलती कि किस प्रकार वनाधिकार एक सतत सामाजिक और ऐतिहासिक संघर्ष का मसला हैं।

5. पर्यावरण सम्बन्धी वैधता : यह मानदण्ड *"माँग करता है कि विज्ञान को शिक्षार्थियों के वृहद पर्यावरण (स्थानीय और वैश्विक) के सन्दर्भ में रखा जाए ताकि वह विज्ञान, तकनीक व समाज के पारस्परिक संवाद के अन्तरफलक (interface) पर मुद्दों को समझ सकें और उन्हें काम के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आवश्यक ज्ञान व कौशल दे सके।"*[2] अध्याय में पूर्वोत्तर भारत में प्रचलित झूम खेती का वर्णन किया गया है : *"एक फ़सल कटने के बाद ज़मीन को कुछ साल तक आराम करने देते हैं, उसमें खेती नहीं करते। इस जगह जो बाँस या जंगल उग जाता है उसे उखाड़ते नहीं। बस गिराकर जला देते हैं। यह राख ज़मीन में खाद का काम करती है। ज़मीन को जलाते समय आस-पास के पेड़ न जलें, जंगलों को नुक़सान न पहुँचे, यह भी देखना पड़ता है। फिर जब इस ज़मीन में खेती की बारी आती है तो ज़मीन को जोता नहीं जाता। मिट्टी को हल्के से हिलाकर बीज छिड़क देते हैं। एक ही खेत में अलग-अलग तरह के बीज जैसे मकई, सब्ज़ियाँ, मिर्च और चावल बोए जाते हैं। फ़सल के समय भी अनचाही घास और पौधों को उखाड़ते नहीं हैं, उन्हें गिरा देते हैं। ताकि वे ज़मीन की मिट्टी में मिल जाएँ। इससे भी ज़मीन उपजाऊ बनती है। अगर किसी परिवार में किसी कारण खेती का काम पिछड़ जाता है तो दूसरे लोग मदद के लिए आ जाते हैं। बस उस परिवार को उन्हें खाना खिलाना पड़ता है।"*[3] यह विवरण शिक्षकों को यह चर्चा करने का अवसर प्रदान करता है कि खेती की पद्धतियाँ पर्यावरणीय परिस्थितियों और सामुदायिक आवश्यकताओं से किस प्रकार आकार लेती हैं। उदाहरण के लिए, झूम खेती का उपयोग मुख्यतः उष्णकटिबन्धीय (tropical) और उपोष्णकटिबन्धीय (subtropical) वन क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों द्वारा किया जाता है, विशेषकर पूर्वोत्तर भारत व दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के निकटवर्ती क्षेत्रों में। झूम खेती विशिष्ट पारिस्थितिक परिस्थितियों और सामाजिक

व्यवस्थाओं के अनुरूप विकसित हुई है। यह चर्चा बच्चों को यह समझने में भी सहायता कर सकती है कि मनुष्य अपने पर्यावरण के विरुद्ध नहीं, बल्कि उसके साथ सामंजस्य स्थापित करके भी जीवन-यापन कर सकता है। शिक्षक इस समझ को और सुदृढ़ बनाने के लिए झूम खेती की तुलना विद्यार्थियों की परिचित स्थानीय कृषि या वन-आधारित गतिविधियों से कर सकते हैं, जिससे वे विभिन्न क्षेत्रों की समानताओं और भिन्नताओं को पहचान सकें।

6. नैतिक वैधता : यह मानदण्ड *"माँग करता है कि पाठ्यचर्या ईमानदारी, वस्तुपरकता, सहयोग, भय व पूर्वाग्रह से आज़ादी जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करे और शिक्षार्थियों में पर्यावरण व जीवन के संरक्षण के प्रति चेतना को विकसित करे।"*[2] इस अध्याय में नैतिक वैधता तीनों कहानियों के प्रस्तुति के तरीक़े में दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, सूर्यमणि के जीवन और सांस्कृतिक परम्पराओं को सकारात्मक और सम्मानजनक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है जो प्रबलता से अपनी संस्कृति को पकड़े रहने की वकालत करती हैं और साथ ही अपने समुदाय को व्यापक समाज से जोड़ने का प्रयास भी करती हैं।[3] इस प्रकार के चित्रणों के माध्यम से यह अध्याय सहयोग, गरिमा और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व से जुड़े मूल्यों के विकास को प्रोत्साहित करता है।

इन मानदण्डों के आधार पर पाठ्यपुस्तक के किसी भी अध्याय का आकलन शिक्षकों को कक्षा में अपनी भूमिका की अधिक प्रभावी योजना बनाने में सहायता कर सकता है। यह समझकर कि अध्याय की विषयवस्तु कक्षा में किस प्रकार के सीखने को सम्भव बना सकती है, शिक्षक यह पहचान सकते हैं कि विद्यार्थियों को पाठ्यचर्या से पूर्ण रूप से जोड़ने के लिए कहाँ अतिरिक्त व्याख्या, चर्चा, स्थानीय उदाहरण या अतिरिक्त सन्दर्भ प्रदान करने की आवश्यकता है। (देखें **बॉक्स-1**)। उदाहरण के लिए :

- **अवधारणाओं के बीच सेतु निर्माण :** सम्भव है कि जंगलों की कटाई और पर्यावरणीय परिवर्तन से सम्बन्धित अवधारणाएँ सभी बच्चों के लिए तुरन्त स्पष्ट नहीं हों। शिक्षक निकटवर्ती जंगलों, खेतों या कृषि भूमि से जुड़े उदाहरणों से शुरुआत कर सकते हैं और नई शब्दावली और व्याख्याओं को लाने से पहले बच्चों को अपने अवलोकन साझा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- **ऐतिहासिक सन्दर्भ जोड़ना :** चूँकि अध्याय में ऐतिहासिक जानकारी सीमित है, इसलिए शिक्षकों को संक्षेप में यह समझाने की आवश्यकता हो सकती है कि जंगलों के उपयोग और वन क़ानूनों में समय के साथ परिवर्तन हुए हैं। केवल कुछ सरल सन्दर्भ भी बच्चों को यह समझने में सहायता करेंगे कि ये मुद्दे अचानक उत्पन्न

बॉक्स-1 : पाठ्यचर्या से सम्बन्ध

यह आकलन शिक्षकों को ऐसी कक्षा-शिक्षण योजना बनाने में सहायता कर सकता है जो प्रिपरेटरी स्टेज के पर्यावरण अध्ययन के निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्यों को पूरा करे :

- **CG-1 :** [विद्यार्थी] अपने आस-पास के प्राकृतिक व सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का अन्वेषण करता है और उससे जुड़ता है। विशेष रूप से, यह पाठ विद्यार्थियों को निम्नलिखित दक्षता विकसित करने में सहायता कर सकता है (C-1.2) : *"परिवार और समुदाय में सम्बन्धों (मानव और पशु/ प्रकृति के बीच सम्बन्धों सहित) व परम्पराओं (कला रूपों, उत्सवों और त्योहारों) का वर्णन करना।"*
- **CG-2 :** [विद्यार्थी] अवलोकन और अनुभवों के माध्यम से अपने परिवेश में परस्पर निर्भरता को समझता है व *'वसुधैव कुटुम्बकम्'* के विचार की सराहना करने की आधारभूमि विकसित करता है। विशेष रूप से, यह पाठ विद्यार्थियों को निम्नलिखित दक्षता विकसित करने में सहायता कर सकता है (C-2.2) : *"अपने निकटवर्ती परिवेश में प्राकृतिक वातावरण और सांस्कृतिक प्रथाओं (कार्य की प्रकृति, भोजन, त्योहारों और परम्पराओं) के बीच सम्बन्ध का वर्णन करना।"*
- **CG-4 :** [विद्यार्थी] सामाजिक व प्राकृतिक परिवेश के प्रति संवेदनशीलता विकसित करता है। विशेष रूप से, यह पाठ विद्यार्थियों को निम्नलिखित दक्षताएँ विकसित करने में सहायता कर सकता है :
  - (C-4.2) : *"अपने निकटवर्ती परिवेश में सांस्कृतिक विविधता (भोजन, वस्त्र, खेल, विभिन्न ऋतुएँ व कटाई और बुवाई से जुड़े त्योहार) का अवलोकन और वर्णन करना।"*
  - (C-4.3) : *"अपने निकटवर्ती परिवेश में प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग का वर्णन करना।"*
  - (C-4.4) : *"यह प्रदर्शित करना कि प्राकृतिक संसाधनों (पेड़, वर्षा जल का उपयोग, मोटे अनाजों के लाभ आदि) को किस प्रकार साझा, संरक्षित और सुरक्षित रखा जा सकता है।"*
  - (C-4.6) : *"विभिन्न परिस्थितियों में लोगों की आवश्यकताओं की पहचान करना – संसाधनों तक पहुँच, समान अवसर, कार्य के वितरण और आश्रय के सन्दर्भ में।"*[2]

नहीं हुए, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित हुए हैं।

- **स्थानीय अनुभवों से जोड़ना :** हालाँकि सूर्यमणि की कहानी झारखण्ड की पृष्ठभूमि में है, लेकिन जंगलों पर निर्भरता और सामुदायिक ज्ञान जैसे इसके विषय उन राज्यों में भी समान रूप से प्रासंगिक हैं जहाँ जंगल जीवन का एक केन्द्रीय हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए, भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023 के अनुसार, उत्तराखण्ड के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 43.7% भाग वन और वृक्ष आच्छादित है।[5] राज्य के कुछ शहरी क्षेत्रों को छोड़कर, अधिकांश बच्चे अपने परिवार के कार्यों, स्थानीय यात्राओं या सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से जंगलों से परिचित हैं। इसलिए ऐसे राज्यों में शिक्षकों के पास सूर्यमणि के अनुभवों को अपने विद्यार्थियों के अनुभवों से जोड़ने के अनेक अवसर होते हैं। उनका यह कथन, *"अगर जंगल नहीं बचेंगे, तो हम भी नहीं बचेंगे,"* कक्षा में चर्चा आरम्भ करने के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान करता है।[3] बच्चों को इस बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि जंगल उन्हें क्या-क्या प्रदान करते हैं, उनके समुदाय ने हाल के वर्षों में कौन-से परिवर्तन देखे हैं और उनके परिवार के बुज़ुर्ग इन परिवर्तनों के बारे में क्या कहते हैं। ऐसी चर्चाओं को विकसित होने के लिए पर्याप्त समय देने से पाठ अधिक सार्थक बन सकेगा।
- **संस्कृति को सन्दर्भ के साथ समझना** : यह अध्याय संस्कृति और सामुदायिक जीवन से जुड़े कुछ विचारों का भी परिचय कराता है। जब बच्चे तोरांग केन्द्र और पारम्परिक प्रथाओं पर किए गए गर्व के बारे में पढ़ते हैं, तब शिक्षक उन्हें यह सोचने में सहायता कर सकते हैं कि उनके अपने सन्दर्भ में संस्कृति का क्या अर्थ है (**चित्र-1** देखें)। शिक्षक यह भी ध्यान दिला सकते हैं कि कृषि समुदायों के त्योहार, खान-पान की आदतें और लोकगीत किस प्रकार फ़सलों व ऋतुओं के इर्द-गिर्द केन्द्रित होते हैं, जबकि मछुआरा समुदायों की सांस्कृतिक परम्पराएँ जलाशयों और जलीय जीवन के इर्द-गिर्द केन्द्रित होती हैं। इस प्रकार की चर्चाएँ बच्चों को यह समझने में सहायता कर सकती हैं कि संस्कृति कोई स्थिर प्रथाओं का समूह नहीं है, बल्कि आजीविका और पर्यावरण द्वारा आकार प्रदान किए गए दैनिक जीवन का एक गतिशील पहलू है। विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति की सराहना करना सिखाते समय शिक्षक उनमें विभिन्न जीवन-शैलियों के प्रति सम्मान की भावना भी विकसित कर सकते हैं और इस बात का ध्यान रख सकते हैं कि अन्य संस्कृतियों को रूढ़ धारणाओं तक सीमित न कर दिया जाए।

चित्र-1 : कुरुख (ओरांव) समुदाय का एक पारम्परिक नृत्य। शिक्षक ऐसे उदाहरणों का उपयोग विद्यार्थियों का ध्यान इस बात की ओर दिलाने के लिए कर सकते हैं कि उनके अपने समुदायों की सांस्कृतिक परम्पराएँ भूमि, जंगलों और दैनिक जीवन से किस प्रकार जुड़ी होती हैं।

Credits: Rocky international, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Kurukh_dance_of_Oraons_.jpg. License: CC BY-SA 4.0 International Deed.

चलते-चलते

हालाँकि एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें पूरे देश के बच्चों को ध्यान में रखकर लिखी जाती हैं, फिर भी यह अध्याय शिक्षकों को अपने स्थानीय परिवेश की वास्तविकताओं के साथ इसके मुख्य विचारों को जोड़ने की गुंजाइश देता है। जब कक्षा का शिक्षण स्थानीय जंगलों, आजीविकाओं और अनुभवों को इस्तेमाल करता है, तब शिक्षक बच्चों की मदद पाठ्यपुस्तक की जानकारी से आगे बढ़कर दी जा रही समझ की ओर जाने में सहायता करते हैं। इससे विद्यार्थी और शिक्षक जंगलों की कटाई जैसे व्यापक मुद्दों की पड़ताल अपने दैनिक जीवन के सन्दर्भ में कर सकते हैं। स्थानीय अनुभवों से प्राप्त यह समझ आगे चलकर विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर के व्यापक प्रश्नों – जैसे वन उपयोग में हो रहे परिवर्तन, विकास सम्बन्धी दबाव व भारत भर में वन-आश्रित समुदायों को प्रभावित करने वाली नीतियों – पर लौटने में भी सहायक हो सकती है। इस प्रकार के सीखने को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों को अपनी समझ का निरन्तर विकास करते रहना होगा, विद्यार्थियों के अनुभवों के प्रति सजग रहना होगा व कक्षा में चर्चा के लिए पर्याप्त जगह बनानी होगी। इस तरह की पद्धति के माध्यम से विद्यार्थी एक व्यापक जुड़ाव-बोध विकसित करना शुरू कर सकते हैं, जो उनके स्थानीय अनुभवों को लोकतांत्रिक ढाँचे के भीतर राष्ट्रीय सरोकारों से जोड़ता है।

मुख्य बिन्दु

- पाठ्यचर्या सम्बन्धी दस्तावेज़ 'किसके जंगल?' जैसे पाठ्यपुस्तक अध्यायों को जंगलों के बारे में सीखने की एक प्रारम्भिक कड़ी के रूप में देखते हैं। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे ऐसे अध्यायों की ऐसी व्याख्या करें जो व्यापक राष्ट्रीय उद्देश्यों और उनकी कक्षाओं की स्थानीय वास्तविकताओं के बीच की दूरी को कम कर सके।
- शिक्षक एनसीएफ़-2005 में वर्णित पाठ्यचर्या सम्बन्धी मानदण्डों के आधार पर इस अध्याय की ताक़त और सीमाओं की पहचान कर सकते हैं। ये मानदण्ड शिक्षकों को यह आकलन करने में सहायता करते हैं कि विषयवस्तु सही, आयु-उपयुक्त, ऐतिहासिक रूप से सन्दर्भित व विद्यार्थियों के परिवेश के लिए प्रासंगिक है या नहीं।
- चूँकि यह अध्याय पूरे भारत के विद्यार्थियों के लिए लिखा गया है, इसलिए इसमें विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों से जुड़े उदाहरण शामिल किए गए हैं। विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक में वर्णित दूरस्थ अनुभवों और कहानियों को अपने आस-पास के प्राकृतिक परिवेश व सांस्कृतिक परम्पराओं से जोड़ने में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है।
- इस प्रकार बनी कक्षा-शिक्षण की योजना से गहराई से सीखने के अवसर उत्पन्न होते हैं। इससे विद्यार्थियों को इस अध्याय में जंगलों के बारे में पढ़ी गई बातों को पर्यावरण, आजीविका और समाज से जुड़े व्यापक प्रश्नों के साथ जोड़ने में सहायता मिलती है।

आभार : आई वंडर... की टीम इस लेख के प्रारूप को हमारे साथ साझा करने और इसके प्रकाशन में सहयोग देने के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के संतोष सिंह मेहता का धन्यवाद करती है। हम अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के राजेश उत्साही का भी धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने मूल प्रारूप (हिन्दी) का अँग्रेज़ी में अनुवाद करने में सहयोग प्रदान किया।

टिप्पणियाँ :

(क) Credits for the image (Teacher reading the textbook) used in the background of the article title: Created for i wonder... using ChatGPT, under prompting by Chitra Ravi (Mar 2026). License: CC BY-NC-ND 4.0 International Deed.

(ख) लेख के हिन्दी अनुवाद की समीक्षा के लिए हम हृदय कान्त दीवान के आभारी हैं।

References:

1. National Council of Educational Research and Training (2005). 'National Curriculum Framework 2005'. National Council of Educational Research and Training. URL: https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005.pdf.
2. National Council of Educational Research and Training (2023). 'National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE)'. NationalCouncil of Educational Research and Training. URL: https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf.
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (पुनर्मुद्रण 2024–2025). 'अध्याय-20 : जंगल किसके ?' हमारे आस-पास : कक्षा-5 के लिए पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक : 182–191. URL: https://ncert.nic.in/textbook/pdf/ehap120.pdf.
4. Guha, R. (1989). 'The Unquiet Woods: Ecological Change and Peasant Resistance in the Himalaya'. Oxford University Press.
5. Forest Survey of India (2023). India State of Forest Report 2023. Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India.URL: https://fsi.nic.in/isfr-2023.

लोकेश डसीला उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ ज़िले के डीडीहाट विकासखण्ड स्थित राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सानदेव में विज्ञान शिक्षक हैं। उन्होंने कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से वनस्पति विज्ञान में पीएचडी व बीएड की उपाधियाँ प्राप्त की हैं और उन्हें शिक्षण का 14 वर्ष का अनुभव है।

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी-एडिटर** : अनुज उपाध्याय